संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ क्रमांक
१	भगीरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	७९ ।
२	डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त	हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास और मृगनयनी	८ ।
३	भगीरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	७९ ।
४	यशपाल	अमिता	४२ ।
५	वही	वही	१४ ।
६	वही	वही	२१ ।
७	वही	वही	१०९ ।
८	वही	वही	१२१ ।
९	वही	वही	१० ।
१०	वही	वही	४३ ।
११	वही	वही	३५ ।
१२	वही	वही	४३ ।

पंचम अध्याय

अमिता उपन्यास का देशकाल - वातावरण --

उपन्यास मानव जीवन का चित्र है। जिसमें प्रधानतया मनुष्य के चरित्र का सजीव वर्णन रहता है। मनुष्य का संबंध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है। मानव के चरित्र्य की पृष्ठभूमि के रूप में देशकाल का चित्रण उसका एक आवश्यक अंग है।

उपन्यास की कथा को सत्यरूप देने के लिए उसे सजीव बनाने के लिए वातावरण की सृष्ठी उपन्यासकार के लिए अनिवार्य है। व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है। इसलिए उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए भी उपन्यास में वातावरण की सृष्ठी अनिवार्य है। देशकाल के अन्तर्गत किसी देश या समाज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ आचार, विचार, रीतिरिवाज, रहन-सहन, समाज की कुरीतियाँ एवं विशेषताएँ आदि समझी जाती है। प्राकृतिक चित्रण भी उद्दीप्त रूप में पात्रों की मानसिक स्थिति को निर्दिष्ट करने में सहायक होते हैं। देशकाल में स्थानीय रंग होने पर उपन्यास में प्रभावात्मकता आ जाती है। तथा कृत्रिमता नष्ठ होकर स्वाभाविकता बढ जाती है। मगर देशकाल वातावरण की सृष्ठी करते समय एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है। देशकाल वातावरण, कथानक के स्पष्टीकरण में साधन ही रहे, साध्य न बन जाए। इस दृष्टी से देशकाल वातावरण की श्रेष्ठता और स्वाभाविक सजीवता उसके संतुलित होने पर है।

सामाजिक उपन्यासों में तो लेखक प्राय: अपने युग की देखी, सुनी और अनुभूत पृष्ठभूमि देता है। पाठक के समसामाजिक होने के कारण उसको जाँचने और विश्वास करने का अवसर रहता है। आगामी युगी के पाठक को लिए तो सामाजिक

उपन्यासकार सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की सामग्री प्रदान करता है ।

देशकाल और परिस्थितियों के संदर्भ में पाठक पात्रों के कार्यकलापों का सही मुल्यांकन करता है । कथानक को वास्तविकता का आभास देने के साधनों में वातावरण मुख्य है । इसके लिए स्थानीय ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है । वर्णन में देश विरूध्दता और काल विरूध्दता के दोष नहीं होने चाहिए । देशकाल के चित्रण का वास्तविक उद्देश्य कथानक और चरित्र का स्पष्टीकरण है । अत: स्थानिय विशेषताओं का ध्यान रखते हुए प्रकृति की भावानुकूल पृष्ठभूमि देना उपन्यास की रोचक्ता की वृध्दी में सहायक होता है ।

देशकाल वातावरण को प्राय: वातावरण का बाह्य प्रकार माना जाता है । इसी दृष्टीसे देशकाल के प्रकार निम्नलिखित है --

१) सामाजिक --

सामाजिक उपन्यासों में लेखक प्राय: अपने युग की देखी-सुनी और अनुभूत पृष्ठभूमि देना है और पाठक के समसामायिक होने के कारण उसको जाँचने का अवसर रहता है । आगे आनेवाली पीढी को सामाजिक उपन्यासकार ,सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की सामग्री प्रदान करता है - डॉ.भगीरथ मिश्र जी कहते है --

" मेरा विश्वास यह है कि यदि उपन्यासकार अपने समाज का अत्यन्त यथार्थ यहाँ तक कि ऐतिहासिक यथार्थ को ध्यान में रखकर वास्तविक जीवन का चित्रण करता है,तो वह न केवल साहित्य की सृष्ठी करता है वरन् सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास के लिए भी सामग्री तैयार करता है या पृष्ठभूमि बनाता है ।" [१]

सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाले सभी वर्णन इसमें जाते है । उदा.वेशभूषा, रीतिरीवाज,सामाजिक वर्ग,शिक्षा,व्यापार,संस्कृति आदि ।

२) प्राकृतिक --

इसके अंतर्गत उपन्यासकार कथा के पात्रों के सुख,दु:ख के साथ प्रकृति की समता विषमता को भी प्रस्तुत करता है ।

३) ऐतिहासिक --

ऐतिहासिक उपन्यासकारको युग की पृष्ठभूमि का चित्रण करने में कठिनाई पैदा होती है। ऐतिहासिक उपन्यासकारको उस युग विशेष का पृष्ठभूमिका चित्रण करना पडता है ,जिसके चरित्रों का वह वर्णन करना चाहता है। अत: वर्णन में उस युग के विशिष्ठ रीति-रीवाज,चाल-ढाल और वातावरण के प्रामाणिक चित्रण द्वारा यह आभास देना पडता है कि वह वही युग है। इसके साथ भी उपन्यास में संघटित एवं संयोजित घटनाएँ भी उस युग के इतिहास में घटित हो। इसके लिए ऐतिहासिक उपन्यासकारको उस युग के एतिहास का अच्छा ज्ञान होना जरूरी है। लेखक जिन घटनाओं,पात्रों एवं परिस्थितियों की कल्पना करें वे भी वैसी ही हो जैसी वास्तविक घटनाएँ हुई हो। देशकाल और परिस्थिति चित्रण उपन्यास के कथानकको सही रूप में प्रकाशित करके उसके पात्रों को बोधगम्य बनाने का साधन ही है,अपने आप में वह साध्य नहीं। यदि अपने ऐतिहासिक ज्ञान के प्रदर्शन को धुन में कोई उपन्यासकार इसे साधन से साध्य बना देगा तो उसका उपन्यास शुष्क पत्नी से अधिक रोचक न बन सकेगा।

उपन्यासकार को अपने पात्रों के बाह्य और आभ्यंन्तरिक दोनों प्रकार के वातावरण का सुक्ष्मातिसुक्ष्म चित्रण करना आवश्यक है। ऐसा वह तभी कर सकता है यदि वह अपने पात्रों के बारे में अपने देश-काल और समाज के बारे में पूरी-पूरी जानकारी रखता है।

` अमिता` ऐतिहासिक उपन्यास है। `दिव्या` की भाँति इसमें भी ऐतिहासिक वातावरण की सजीव कल्पना की गई है।` दिव्या ` में ऐतिहासिक वातावरण ही प्रधान है। ` अमिता ` में अशोक ऐसे एतिहास प्रसिध्द एक-दो पात्र भी उपलब्ध है।` कलिंग विजय ` भारतीय इतिहास की एक प्रसिध्द घटना है। इस युध्द की भयानक विभीषिका एवं नृशंसता का सम्राट अशोक के हृदय पर प्रभाव होता है और वह अजीवन युध्द न करने की शपथ लेता है। सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन के बहुत कुछ कारण हो सकते हैं। लेकिन यशपालजी ने अपनी कल्पना से अच्छा मार्ग दिखाया है। बच्चे शांति के प्रतिक होते है और उनके प्रभाव से

लोटे से भी कठोर हृदय को सहज तोड देनेवाले भी, रेशम के बंधनों में बंध जाते है। सम्राट अशोक बालहठ के सामने नतमस्तक होते हैं। यह कोई अत्युक्ती नहीं हैं। बच्चे के भी विचार बडों से अच्छे होते है। यशपालजी को बाल-मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान है और उसका प्रयोग उन्होंने अमिता उपन्यास में किया है।

`अमिता` का वातावरण कल्पित इतिहास होने के कारण उतना ही अशोक कालीन कहा जा सकता है जितनी कि उपन्यास की समस्या। यशपालने पौराणिक मिथक को लेकर तथा ऐतिहासिक शैली को लेकर वातावरण का निर्माण किया है। युध्द की आशंका के समय का वातावरण इस प्रकार चित्रित किया है --

आचार्य, शस्त्र और सैनिक ही क्या करेंगे ? अशोक के इस सैन्यदल को राजधानी से पचास योजन आगे बढ कर पराजित नहीं किया जा सकेगा। इस बार तो पगपगपर लड कर उसका बल क्षीणकर, अन्तिम निर्णय यहीं राजधानी के प्राचीर पर ही होगा। ऐसे समय हमारी मुख्य शक्ति उत्तर द्वार का दुर्ग ही होगा।" [२]

प्राचीन काल वैभवशाली रहा है। लेखक ने इस वैभव को `दिव्या` में मधुपर्व के रूप में चित्रित किया है। तो `अमिता` में राज्यभिषेक तथा शोभायात्रा जैसे प्रसंगों से दिखाई देता है। इस वर्णनों से यह स्पष्ट होता है कि राजा या रानी का दर्शन उस काल में ईश्वर दर्शन का माहात्म्य रखना था। शोभायात्रा, वैभव का खुलेआम प्रदर्शन था। इसका प्रतिक अमिता में एक प्रसंग है --

" महारानी की शोभायात्रा के आरंभ में झूलों से सजे उंटोंपर अनेक सैनिक राजपताकाएँ लिये महारानी का जय घोष कर रहे थें।" [३]

पौराणिक काल के वेश-विन्यास का तथा रीतिरीवाज का परिचय अमिता में उपन्यास के प्रारंभ में ही दिखाई देता है। जैसे --

" शीत में भी भीड के लोगों के शरीरपर कमही वस्त्र थे। उनके सीरोंपर फटी-पुरानी पगडियाँ, कमर तक अंगरखे और घुटनोंतक कपडों के छोटे-टुकडे लिपटे हुए थे। कुछ लोग केवल धोती मात्र से ही कन्धे से घुटनोंतक शरीर को लपेटे थें।" [४]

समाज व्यवस्था का भी चित्रण उन्होंने अच्छी तरहसे किया है। दास प्रथा भी अमिता में आ गयी है। दासों को खूलकर प्रेम करने का या शादी करने का अधिकार नहीं है। जिसका वह दास है, उसकाही बनकर रहना है।

यशपालजी के ऐतिहासिक वातावरण में कुछ भी रह गयी है। अशोक काल में अंगरखा नहीं पहना जाता था लेकिन यशपालजी ने अंगरखा शब्द का प्रयोग किया है।

युध्द के पश्चात रण क्षेत्र का जो हृदयद्रावक चित्र लेखक ने प्रस्तुत किया है वह अत्यन्त सजीव है ही, इस के साथ ही युध्द के प्रति हमारे हृदय में घृणा पैदा होती है।

अशोक कलिंग को विजय कर, अपनी विजय यात्रा के मार्ग से ही मगध की ओर लौटा। जिस ओर उसकी दृष्टि जाती देश, नरमुंडो और ककाली से ठका दिखाई देता। सब ग्राम और नगर उजडी और जली हुई बस्तियों के आंधे जले की भाँति जान पडते थे। जहाँ कही मनुष्य दिखाई देते व बहुत त्रस्त और दु:खी थे। केवल शवों पर मँडराते गीध, गीधड, कौए ही प्रसन्न थे। इन दृश्यों को न देखने के लिए सम्राट हाथी की सवारी छोडकर पर्दा से ठकी पालकी में बैठकर चलने लगा।

इस दृश्य से युध्द में हुए विध्वंस और नर-संहार को अति सजीव और मार्मिक चित्र हमारे समक्ष खींचा जाता है।

यशपाल प्रकृति के घुमक्कड थे। अत: उनका ज्यादह ध्यान भौगोलिक क्षेत्र की ओर दिखाई देता है। 'अमिता' में लेखक ने ऐतिहासिक देशकाल के ढाँचे में वर्तमान जगत के स्थानीय सुत्रों को जोड दिया है। यशपालने प्राचीन शब्दावलीका प्रयोग किया है। वर्तमान का चित्रण प्राचीन मुखौटे से किया है।

निष्कर्ष --

यशपाल जी ने 'अमिता' उपन्यास में प्रारंभ से अंततक ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिती की है और वे उसमें सफल भी हुए हैं। कालविशेष में

विश्वसनियता रखते हुये उन्होंने संस्कृत-प्रचूर भाषा रखकर उन्हें प्रगट किया है। पोशाक में वल्कला का प्रयोग कर प्राचीनता को उभारा है। शस्त्रों में तलवार, शिरस्त्राण आदि को चित्रित किया है। शोभायात्रा, खड्ग प्रतियोगिता, राज्याभिषेक के द्वारा काल के वैभव का चित्रण किया है। युगीन परिस्थितियों का चित्रण करने के लिए समाज व्यवस्था तथा समाज के वर्गों का दास एवं अभिज्ञान आदि में विभाजन दिखाकर विषमता को स्पष्ट किया है।

यशपाल ने `अमिता` उपन्यास में अत्याचार का जो प्रसंग चित्रित किया है उसके द्वारा हमारे सामने उस समय के सामान्य लोगों की स्थितिका या उस समय के वातावरण का चित्र आँखों के सामने आता है। इस विषय में इतनाही लिखना पर्याप्त होगा कि यशपाल ने देशकाल और वातावरण को चित्रित करने के लिए जो भी चित्र प्रस्तुत किए है वे अत्यन्त सजीव, व्यापक और प्रभावोत्पादक है। लेखक ऐतिहासिक वातावरण का चित्रण करने में पूर्ण सफल है।

`अमिता` उपन्यास का वातावरण ऐतिहासिक होते हुये भी यशपालजी ने `अमिता` को मार्क्सवादी दृष्टीकोण से देखा है। ऐतिहासिक उपन्यास की कसौटीपर एक अमिता उपन्यास पूर्ण सफल सिध्द होता है। इसमें ऐतिहासिक वातावरण उपस्थित करने में सामाजिक उपन्यासों के प्रणेता यशपालजी ने अद्भूत क्षमता का परिचय दिया है।